रामराज्य
आहवाहन मिशन

परिचय पुस्तिका

मुख्य कार्यालयः

ए–1 व बी–2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर, सैक्टर–V
साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) 201005
दूरभाष : 0120–6516399, 9313055063
Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

रामराज्य आहवाहन मिशन

क्रम. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1
2.	मिशन की गतिविधियां	2
3.	आप से मेरी अपेक्षाएं	3–4
4.	निष्कर्ष	5
5.	परिचय पुस्तिका की व्याख्याऐं	6–8

परिचय

रामराज्य आहवाहन मिशन (R.A.M.) एक ऐसा NGO है जो पृथ्वी पर दोबारा से रामराज्य का सपना देख रहा है तथा ईश्वरीय कृपा से इसको दुनिया में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है[1] कैसेः–

मिशन सोचता है और समझता है कि पृथ्वी पर हर इन्सान अगर हम विचार करके देखे तो कहीं न कहीं का राजा है, उदाहरणार्थ मुखिया अपने परिवार का राजा है, दुकानदार अपनी दुकान का राजा है, डाक्टर अपने क्लीनिक का राजा है आदि। अब अगर हर राजा अपने राज्य को इस प्रकार चलाए जैसे कि राम अपना राजपाट किया करते थे तो रामराज्य आ जाएगा।

मिशन सोचता है कि बस जरुरत है केवल इस विचार को लाने की कि हम अपना राज्य ऐसे करें जैसे राम जी अपना राजपाट करते थे, जोकि हम आसानी से समझ सकते हैं कि वे कैसे करते थे, अगर हम निरन्तर उन पर मनन करते रहें तथा उनको निरन्तर पढ़ते रहें तथा मन में निरन्तर अभ्यास करते रहें।

अपने राज्य को रामराज्य जैसा बना लेने के बड़े लाभ हैं क्योंकि इससे हम पाते हैं सुख ही सुख, हम भी सुख पाते हैं, हमारा परिवार भी सुख पाता है। तथा जितने लोग भी हमसे जुड़े हुए हैं वे सब भी सुख पाते हैं तथा जितने लोग भी हमसे जुड़े हुए हैं वे सब राम होने लग जाते हैं तथा वे भी सुखी होने लग जाते हैं और फिर शुरु होता है सुखों का खेल आता है महासुख अर्थात सुखों का समुद्र। ध्यान रक्खें रामराज्य में सुखों की कोई सीमा नहीं होती ये तो असीमित तथा सभी प्रकार के होते हैं। दैहिक[2], दैविक[3], भौतिक[4], इस लोक का सुख[5], परलोक का सुख[6], पैसे का सुख[7], मन का सुख[8], लोगों का सुख[9], परिवार का सुख[10] आदि।

अतः मिशन का उद्देश्य है कि आप श्री राम को पढ़–पढ़ कर, श्री राम का मनन करते हुए श्री राम का अभ्यास करते हुए क्योंकि (Practice makes man perfect)[11], श्री राम जैसी सुन्दर बुद्धि [12] विकसित करें तथा रामराज्य के सुखों (महासुख) का लाभ उठाऐं। तथा मिशन से सीखें कि क्या आसान एवं सच्चा तरीका है श्री राम को पढ़ने का, श्री राम को मनन करने का एवं श्री राम का अभ्यास करने का।[13]

मिशन की गतिविधियां (14)

1. जिनको खाना बनाना नहीं आता उन्हें खाना बनाना सिखाना।
2. जिन्हें प्रेम करना नहीं आता उन्हें प्यार प्रेम सिखाना।
3. जिन्हें पढ़ना नहीं आता उन्हें पढ़ना सिखाना।
4. जिन्हें हँसना नहीं आता उन्हें हँसना सिखाना।
5. जिन्हें संगीत नहीं आता उन्हें संगीत सिखाना।
6. जिन्हे नृत्य नहीं आता उन्हें नृत्य सिखाना।
7. जिन्हें घर (राज्य) सजाना नहीं आता उन्हें सजाना सिखाना।
8. जिन्हें सिलना नहीं आता उन्हें सिलना सिखाना।
9. जिन्हें कढ़ाई करना नहीं आता उन्हें कढ़ाई करना सिखाना।
10. जिन्हें मैनेजमेंट नहीं आता उन्हें मैनेजमेंट सिखाना (गृह व्यवस्था, समय प्रबन्ध, आहार व्यवस्था, दवाई प्रबन्ध, दाम्पत्य सुख प्रबन्ध, प्रेम व्यवस्था, अतिथ्य व्यवस्था, हास्य व्यवस्था आदि)
11. जिन्हें फस्ट एड मैनेजमेंट नहीं आता उन्हें फस्ट एड मैनेजमेंट सिखाना।
12. जिन्हें क्षमा करना नहीं आता उन्हें क्षमा करना सिखाना।
13. जिन राजाओं को व्यवस्थाऐं बनाना नहीं आता उन्हें व्यवस्थाऐं बनाना सिखाना।
14. जिन्हें नहीं आता मनों के साथ अहिंसा का व्यवहार करना उन्हें मानसिक अहिंसा करना सिखाना।
15. सिखाना राम को पढ़ना, राम पर मनन करना तथा राम का अभ्यास करना।
16. दोस्ती को सच्ची दोस्ती बनवाना।
17. अपने काम को या रोजगार के बारे में सुन्दर तरीके से सोचना सिखाना।

आप से हमारी अपेक्षाऐं :–

1. कहते हैं रामायण में लिखा है कि सत्संग के बिना राम नहीं मिलते। सत्संग का मतलब सन्तों का संग, सन्तों से दोस्ती, रामराज्य आहवाहन मिशन को एक दोस्त मानें तथा ऐसी व्यवस्था बना लें कि निरन्तर वह आपका दोस्त बना रहे, आपकी गृहस्थी में कोई विचार उलझे तो यह उसको श्रीराम बुद्धि के अनुसार सुलझाने में आपकी मदद करे। तथा यह आपको समय समय पर अपनी दोस्ती का आनन्द उपलब्ध करा सके।

2. आप भी अन्य सब लोगों के लिए सत्संग बनें तथा उनको भी इस सुन्दर सी राह पर रक्खें, कहते हैं जो बोओगे वही काटोगे, जो दोगे वही पाओगे, अपने आस–पास, अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की बुद्धि को भी सुन्दर बुद्धि बनाने का प्रयास करें।

3. आप इस मिशन पर विश्वास करें कि यह सच्चा है क्योंकि यह सिखाने निकला है सच की राह, सच्ची सच की राह क्योंकि अन्त भला तो सब भला और अंत में तो जीत सच की ही होती है तथा लम्बे समय तक तो सच ही टिकता है, सच कभी परेशानियां नहीं देता, यह हमारा भ्रम है बस सिर्फ हमें लगता है देखा जाए तो हमें आज तो थोडी सी परेशानी होती है लेकिन सच बताने से यह हमेशा के लिए आने वाली परेशानियों से हमें बचा लेता है। सीखें **सच्ची सच की राह**।[15]

4. आप अपने साम्राज्य राज्य, घर, दुकान में एक सुबह की, और एक शाम की पूजा (प्रार्थना) अवश्य करें जिसमें अपने धर्मानुसार इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के लिए दीपक जलाऐं उनकी आरती करें। उनसे प्रार्थना करें। कोशिश करें आपके राज्य के सभी लोग यथासम्भव, सुखानुसार उसमें शामिल हों, शरीक हों ताकि हम और हमारे राज्य के सभी लोगों को, क्योंकि यह राज्य परमात्मा की रोज नियम से पूजा, प्रार्थना करता है, परमात्मा की कृपा पाने के अधिकारी हो सकें, राजा का कर्तव्य है ऐसी व्यवस्था बना देना।

5. राजा का कर्तव्य है कि कहीं भी लोगों के मनों में कोई दबे हुए शिकवे, शिकायत न रहें जो कि गलत समझे जाने से (Communication Gap) हो जाते हैं व्यवस्था बनायें। या तो खाने पर, पूजा पर, या किसी खेल को आयोजन करके या एक विशेष भोजन पर सब लोग साथ बैठें ताकि सभी के मनों का मेल हो क्योंकि सब मन मिले का मेला है।

6. हम श्री राम के उस रुप का[16] जिसमें वह अपने शरणागतों की रक्षा अपने सेवकों से प्रेम तथा सेवकों पर अपनी कृपा अपने आश्रितों का ध्यान रखते थे का अनुसरण करें बस हम श्री राम के काम में हाथ बटायें (क्योंकि उनका काम तो रामराज्य बनाना ही था) सभी जीव भगवान पर आश्रित हैं, तथा भगवान का काम है अपने आश्रितों, शरणागतों, भक्तों का ध्यान रखना उन्हें दुखों से बचाना, हम भगवान के इस सुन्दर काम में उनका हाथ बटायें और उन्हें (भगवान को) अपना आभारी बनायें।[17]

7. अहिंसा का रास्ता अपनाऐं केवल शारीरिक अहिंसा ही नहीं बल्कि मानसिक अहिंसा भी। अगर आपने मानसिक अहिंसा करना सीख लिया तो यह देगा आपको सबका प्यार आपके राज्य परिवार में प्यारपूर्ण वातावरण बन जाएगा। मानसिक अहिंसा मतलब किसी के मन को न कुचलें बल्कि हो सके तो कोशिश करें ऐसा करने की जिससे कि आपका राज्य ,परिवार के सदस्यों तथा अन्यों के मन खुश हो जाऐं।

8. ध्यान रखें अगर आप सबों को खुशी दे रहे हैं तो अपने (स्वयं) को भी खुशी ही दें अरे भाई आप का अपने पर हक औरों के हक से ज्यादा ही होना चाहिए फिर अपने को ही कम क्यों सन्तुलित करें हो जाता है।

9. आप मिशन के कार्य में यथा सम्भव सभी प्रकार के जो भी सम्भव हैं, सहयोग प्रदान करें मगर ऐसा सहयोग जिससे आप गर्व महसूस करें और जिससे आपको खुशी मिले ताकि हमारा मिशन अपने उदेश्य में कामयाब हो सके। कहते हैं तु भगवान के रास्ते पर चल कर तो देख तेरे लिए सारे रास्ते न खोल दूँ तो कहना, तु मेरे लिए आंसू बहा के तो देख मै तेरी सारी दुनिया अपनी न बना दूं तो कहना, तू मेरे पर लुटा के तो देख, मैं तेरे पर खजानों का ढेर न लगा दूं तो कहना, तु मुझे अपना बना के तो देख मैं हर एक को तेरा अपना न बना दूं तो कहना।[18]

निष्कर्ष :–

कृपा बनी रहे हम पर हमारे गुरु जी की जिन्होंने हमसे तमाम यज्ञ कराये जिसके प्रसादस्वरुप मुझे श्री हनुमानजी ने श्री राम जी चरणों में डाल दिया तथा रामराज्य के सपने सपनों के द्वारा प्रेरणा दे देकर मेरे को रामराज्य बनाने के रास्ते पर लगाया तथा भला हो देवी माँ दरबार का जिसने समय समय पर पर मेरी देवताओं से बात करा–कराकर मेरा मार्गदर्शन किया। अगर भगवान दुनिया में रामराज्य, सतयुग, स्वर्णयुग लाना चाहते है तो कोई रोक नहीं सकता निश्चित रुप से आएगा ही आएगा, अगर यह श्री राम का, परमात्मा का, वाहे गुरु का, अल्लाह का, भगवान श्री सच्चिदानन्द घन का प्रोजेक्ट है तो प्रोजेक्ट कामयाब होगा ही क्योंकि श्री राम तो हमेशा ही सभी उलझनों और परेशानियों को दूर करते हुए अन्ततः सफल हो ही जाते हैं।

अन्ततः निष्कर्ष यही है जैसा रामायण में लिखा है सत्संग आप रामराज्य आहवाहन मिशन के दोस्त बनें ताकि दोस्ती के द्वारा मिशन आपके जीवन में प्रवेश पा सके एवं आपके रोजमर्रा के जीवन में रामराज्य को उतार सके तथा आपके राज्य को भी रामराज्य की तरह आनन्दित, खुशहाल तथा सुखी करने में आप की मदद कर सके।

Annexure Explanations to Introduction
परिचय पुस्तिका की व्याख्याऐं

1. यह कहते ही एक विचार उठता है अरे कैसी बात कर रहे हो रामराज्य आज कलयुग में रामराज्य। अरे भाई आज तो वह सब व्यस्थाऐं ही नहीं है न तो कोई राजा है न कोई राज्य है आदि। असम्भव यह तो बेकार की बात है। नहीं भाई यह आपका भ्रम है जो मिशन ने सपना देखा है सत्य है आगे पढ़ें।
2. दैहिक सुख : जब हमारा शरीर अपने सभी काम राम जी की तरह करता है राम जी की तरह अपना ध्यान रखता है तो देह बीमार नहीं होती तथा इन्सान देह का सुख प्राप्त करता है।
3. दैविक सुख : जब हम अपने काम, दूसरों के साथ व्यवहार राम जी की तरह करते है तो देवता लोग हमसे नाराज नहीं होते हैं। वे नाराज नहीं होते तो हमें उनके गुस्से के कोप का भागी नहीं बनना पड़ता है तथा बल्कि वे तो हमसे और भी प्रसन्न रहते हैं तथा हमें ज्यादा से ज्यादा सुखी बनाने का प्रयास करते हैं।
4. भौतिक सुख : जब हम राम जी की तरह जीते हैं तो हम अपने को उच्च वर्ग का बनाते हैं अतः आधुनिक सुख सुविधाओं का सुख लेते हैं।
5. इस लोक का सुख : जब आप इस लोक में राम जी जैसा सुन्दर काम कर रहे हैं तो आप इस लोक में सुखी रहेगें ही अर्थात इस लोक का सुख प्राप्त करेंगे क्योंकि यह निश्चित है जब आप राम जी जैसा सुन्दर व्यवहार तथा कर्म करते हैं तो आप स्वयं सुख का अनुभव करते है।
6. परलोक का सुख : जब आप राम जी जैसे काम करते हैं तो यह पुण्य बन जाते हैं और पुण्य ही तो हैं जो परलोक तक जाते हैं तथा परलोक में भी आपको सुखी बनाते हैं। इस प्रकार आप परलोक का भी सुख प्राप्त करते हैं।
7. पैसे का सुख : जब इन्सान राम जी की तरह अपने रोजगार को करता है तो उसका रोजगार उस पर पैसा बरसाता है खूब पैसा वह कमाता है तथा पैसे का सुख भी उसको मिलता है।
8. मन का सुख : जब इन्सान राम जी की तरह काम करता है तो उसका मन भी खुश रहता है तथा उससे औरों के मन भी खुश रहते हैं। जिससे कि वह मन तथा मनों का सुख प्राप्त करता है।
9. लोगों का सुख : जब इन्सान राम जी की तरह से अपने काम करता है तो वह लोगों का प्यारा हो जाता है तथा सभी लोग उसे प्यार करते

है तथा उसे सब प्रकार से सुखी तथा खुश करना चाहते हैं इस प्रकार उसको अनजानें में ही तमाम लोगों का सुख प्राप्त होता है।

10. परिवार का सुख : जब इन्सान अपने काम राम जी की तरह करता है तो उसका परिवार भी सुखी रहता है खुश रहता है परिवार का मन खुश रहता है तो सारा परिवार उपने इस आदमी को सब प्रकार से सुख पहुंचाने की कोशिश करता है। तथा इस प्रकार वह अपने परिवार का भी सुख एवं सच्चा सुख प्राप्त करता है।

11. पढ़–पढ़कर मनन करते हुए तथा अभ्यास करते हुए मतलब अगर हम देखें तो कोई भी बचपन से कुछ नहीं जानता है बचपन से आज तक जिसने जो पढ़ा जिसने जो देखा अर्थात् मनन किया तथा जिसने जिस का अभ्यास किया वह वो ही हो गया कोई जन्म से वैज्ञानिक नहीं होता विज्ञान पढ़ा, उसे याद किया, उसका अभ्यास किया तो वैज्ञानिक हो गया आदि। अर्थात् राम जी को पढ़कर उनका मनन करके अर्थात उनको अपनी कल्पनाओं में देखकर उन का अभ्यास करके राम बड़ी आसानी से बना जा सकता है।

    अभ्यास : यह बहुत ही महत्वपूर्ण है अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कल्पना भी असम्भव है नीचे देखकर उपर रक्खी मछली की आँख को भेदना।

12. श्री राम जी जैसी सुन्दर बुद्धि : हर चीज को प्रेम भरी नजर से देखना, हर किसी की मदद करने की सोचना, हर काम को इस प्रकार से करने का प्रयास करना कि वह सराहा जाए, हर समय ध्यान रखना कि उसकी वजह से किसी को परेशानी न हो और अगर आवश्ययक है तो कम से कम हो। तथा अपने जैसी ही शिक्षा और सभी को भी देना ताकि वे भी लोगों द्वारा या खुद श्री राम के द्वारा सराहे जाऐं।

13. बस रामायण को अपनी किताब बना लें जीवन भर उसको निरन्तर पढ़ते रहें चाहे रोज एक ही पेज पढ़ें, अपने सुख अनुसार। भगवान को सुनाऐं खुद को सुनाऐं अपने बच्चों को सुनाऐं क्योंकि इसे पढ़कर ही आप जानेगें कि वे कितनें प्यारे से थे, वे कितना सबसे प्यार रखते थे, वे कितने गम्भीर थे, वे कितनी हिम्मत वाले थे, वे कितना जीवन का आनन्द लेते थे, वे कितना कर्मठ थे तथा कितना विनम्र थे आदि। यह आपके जीवन को प्रभावित करेगा।

14. ये जो गतिविधियां हैं एक परिवार को खुश तथा सुखी बनाने के उददेश्य से बनायी गयी हैं। हर परिवार को राज्य माना गया है तथा देखा गया है कि अगर परिवार में कुछ ऐसी कमियां हैं तो उन्हें दूर

करके परिवार को निश्चित रुप से सुखी किया जा सकता है ये ही कमियां है जो परिवार में दुख पैदा करती हैं।

जब परिवार में दस लोग होते हैं तो कोई किसी गुण में पारंगत होता है कोई किसी में। बस गड़बड़ एक ही है कि जिसे जो आता है वह दूसरों को जिन्हें नहीं आता उन्हे डांटता रहता है तथा अपनी डींग मारता रहता है जबकि कई दूसरी चीजें जो ओरों को आती है उसको भी नहीं आती है। बस यही उलटी गंगा है।

काश जो हमें आता है हम दूसरों को डांटने की बजाय उन्हें सिखाऐं तथा जो हमें नहीं आता हम सीखें तो बस चारों तरफ आनन्द हो जाएगा।

ऐसी सोच के साथ इन गतिविधियों में शामिल होना है। भगवान ने यह दुनिया बनायी है तथा अपने सारे गुण बांटे है कोई किसी को–कोई किसी को हमने सबको ढूंढ–ढूढ के सब सीख लेने हैं तथा सिखा देने हैं तथा ऐसे ही इन्सान भगवान बन जाता है।

15. सच्चा सच–यह वह सच है जो भला करने के लिए प्रयोग किया जाता है। जो किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए किसी को दुख पहुंचाने के लिए बोला जाता है वह सच नहीं होता है। सच का सच्चा अर्थ जानें तथा सच के द्वारा लोगों का ज्यादा से ज्यादा भला करें।
16. राम जी के उस रुप का नहीं जिसमें वे दुष्टों पर धनुष बाण उठाते थे क्योंकि इनका वह रुप तो उन्हें ही सुहाता है हमें नहीं यह हमारा काम नहीं है हमें तो यह भी नहीं पता कि जिसे हम दुष्ट समझ रहे हैं वह दुष्ट है भी या नहीं।
17. क्योंकि जब कोई दीन–दुखी भगवान को पुकारता है तो उन्हें उसके दुख दूर करने के लिए भाग कर आना पड़ता है तो जितने दुखियों के दुख हम दूर कर सकते हैं उतनों के दुख हम दूर कर दें। भगवान बड़े खुश होंगे कि यह आदमी तो बहुत बढ़िया है मेरी कितनी भाग दौड़, मेरा कितना काम इसने कम कर दिया इसका ध्यान अवश्य रखना है तथा पता नहीं भगवान कहां पर कैसे कब इस आभार को चुकाऐं तथा तुम्हारे को खुश करें आप तो ऐसे आभार जीवन भर भगवान पर चढ़ाते ही रहें, चढ़ाते ही रहें।
18. कहते है कि भगवान की ऐसी प्रतिज्ञा है। अब कहते हैं तो सही ही होगी अब भगवान ने प्रतिज्ञा की है तो निभाऐंगे ही हम तो अपना काम करें बाकी भगवान का काम है।